Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-251-253

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 251-253
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com
Author's :

डॉ. तुलसी छेत्री

असम, भारत.

Corresponding Author :

डॉ. तुलसी छेत्री

असम, भारत.

नेपाली राष्ट्रवाद पर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव

प्रस्तावना : नेपाल के इतिहास में राणा विरोधी लोकतांत्रिक क्रांति का प्रादुर्भाव भले ही प्रथम विश्वयुद्ध के बाद के वर्षों में दिखाई देता है परंतु इसकी वास्तविक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सन 1816 की 'सुगौली संधि' के साथ ही तैयार होने लगी थी। इसी संधि के माध्यम से नेपाल और ब्रिटिश भारत के बीच स्थायी राजनीतिक संबंधों की शुरुआत हुई थी। सन 1845 तक नेपाल की आंतरिक सत्ता संरचना और राजाओं की स्थिति में कोई युगांतरकारी परिवर्तन नहीं हुआ लेकिन सन 1846 में जंग बहादुर राणा के सत्ता में आने के बाद भारत और नेपाल के संबंधों को एक नई दिशा मिली। राणा शासकों ने अपने तात्कालिक हितों को साधने के लिए सन 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश साम्राज्य का पुरजोर समर्थन किया और दस हजार गोरखा सैनिकों को अंग्रेजों की सहायता के लिए भेजा। इसी घटनाक्रम के बाद ब्रिटिश सेना में गोरखा सैनिकों की नियमित भर्ती की परंपरा स्थापित हुई जिसने नेपाली नागरिकों के लिए भारत में रोजगार और दीर्घकालिक प्रवास के द्वार खोल दिए। यही प्रवास आगे चलकर नेपाल में राजनीतिक चेतना और राष्ट्रवाद के प्रसार का मुख्य जरिया बना।

बीज शब्द : नेपाली राष्ट्रवाद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राणा शासन, सुगौली संधि, जन-क्रांति 1950, राजनीतिक चेतना, दिल्ली समझौता।

प्रवास, आधुनिक शिक्षा और वैचारिक क्रांति : राणा प्रशासन की दमनकारी तानाशाही से त्रस्त होकर बीसवीं सदी के तीसरे और चौथे दशक में नेपाल के अनेक बुद्धिजीवी और देशभक्त भारत की ओर पलायन कर गए और यहाँ प्रवासी के रूप में जीवन व्यतीत करने लगे। उस कालखंड में भारत के बनारस, कोलकाता और दार्जिलिंग जैसे शहर आधुनिक शिक्षा, साहित्य और राजनीतिक विमर्श के सबसे बड़े केंद्र थे। नेपाल से इन भारतीय शहरों में शिक्षा प्राप्त करने आए विद्यार्थी जब वापस अपने देश लौटे तो वे अपने साथ स्वतंत्रता, समता और लोकतंत्र

जैसे आधुनिक विचारों की बौद्धिक पूंजी भी लेकर गए। इन विचारों ने नेपाली जनमानस को झकझोर दिया और वे राणा शासन की निरंकुशता के विरुद्ध संगठित होने के लिए प्रेरित हुए। इसी वैचारिक प्रभाव के तहत नेपाली नवयुवकों ने भारत के 'गाँधी राष्ट्रीय विद्यापीठ' से प्रेरणा पाकर सन 1936 में काठमांडू में 'महावीर विद्यालय' की स्थापना की। इस विद्यालय के माध्यम से राणा सरकार की नीतियों के खिलाफ राष्ट्रवादी स्वर मुखर होने लगे जिसके कारण राणा सरकार ने दमनकारी रुख अपनाते हुए इस स्कूल को बंद करवा दिया फिर भी इस संस्था ने नेपाली समाज में राजनीतिक चेतना की जो लौ जलाई वह बुझ नहीं सकी।

समानान्तर संघर्ष और भारतीय आंदोलन का प्रभाव : नेपाल की आम जनता का राणाशाही के विरुद्ध संघर्ष और राष्ट्रीय चेतना के विस्तार का यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बिल्कुल समानांतर गति से चलता रहा। नेपाली क्रांतिकारियों की भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में गहरी और सक्रिय रुचि थी। उनका यह अटूट विश्वास था कि जब तक भारत ब्रिटिश दासता से मुक्त नहीं हो जाता तब तक नेपाल को राणाओं के दमनकारी चंगुल से आजादी मिलना असंभव है। यही कारण था कि सन 1947 में जैसे ही भारत स्वतंत्र हुआ दोनों देशों के राजनायिक संबंधों में एक नया मोड़ आया। स्वतंत्रता के तुरंत बाद भारत सरकार ने नेपाल में लोकतंत्र की बहाली के लिए वहां के निर्वासित नेताओं को नैतिक और रणनीतिक सहायता देना प्रारंभ कर दिया जिसकी अंतिम परिणति सन् 1950 की ऐतिहासिक जन-क्रांति के रूप में सामने आई। इस जन आंदोलन में नेपाल के राजा और आम जनता ने मिलकर राणा शासन के खिलाफ संयुक्त मोर्चा खोल दिया था। सन 1950-51 का यह नेपाली जन आंदोलन केवल आंतरिक शक्तियों का प्रयास नहीं था बल्कि यह भारत के वैचारिक और व्यावहारिक सहयोग का एक मिलाजुला परिणाम था।

वैचारिक संवाहक और सामाजिक आंदोलनों की भूमिका : नेपाल के इस व्यापक जन-जागरण का नेतृत्व वी.पी. कोइराला, के.पी. उपाध्याय, डी.आर. रेग्मी, सुवर्ण शमशेर और एम.पी. कोइराला जैसे ऊर्जावान युवा नेताओं के हाथों में था। ये सभी राजनेता महात्मा गाँधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू के राष्ट्रवादी दर्शन से गहरे स्तर पर प्रभावित थे। इसी प्रकार काठमाण्डू विश्वविद्यालय के प्रबुद्ध वर्ग और बुद्धिजीवियों पर भी स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा गाँधी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता था। भारतीय आर्य समाज आंदोलन से अनुप्राणित होकर शुक्रराज शास्त्री ने नेपाल के भीतर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ और सुधारों के पक्ष में आवाज उठाई। इसी सिलसिले में शास्त्री जी एक प्रतिनिधि मंडल के साथ भारत आकर महात्मा गांधी से मिले भी थे परंतु नेपाल लौटते ही उन्हें राणा सरकार द्वारा बंदी बना लिया गया और अंततः मृत्युदंड दे दिया गया। इस दमनकारी कृत्य ने नेपाल के अन्य समाज सुधारकों को और अधिक उग्र कर दिया जिसके बाद रघुनाथ प्रसाद गुप्ता, उदयराजलाल और राजालाल आर्य जैसे समाजसेवियों ने तराई क्षेत्र के भारतीयों और नेपालियों को राणा शासन के विरुद्ध पूरी तरह लामबंद कर दिया।

राजनीतिक संगठनों का उदय और दिल्ली समझौता : राणा शासकों ने तत्कालीन वैश्विक परिवर्तनों और भारत में चल रही लोकतांत्रिक बयार से नेपाल की जनता को पूरी तरह अलग रखने का प्रयास किया लेकिन उनका यही दमनकारी मंसूबा अंततः उनके पतन का कारण बन गया। नेपाल से निर्वासित और भारत में पढ़ रहे राष्ट्रवादियों ने मिलकर नेपाली नागरिक अधिकार समिति, प्रचंड गोरखा, प्रजा परिषद, नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस और नेपाली डेमोक्रेटिक कांग्रेस जैसे सशक्त राजनीतिक संगठनों की नींव रखी। इन संगठनों का एकमात्र लक्ष्य नेपाल में राणाशाही को समाप्त कर लोकतंत्र की स्थापना करना था। यह राजनीतिक हलचल उस समय अपने चरमोत्कर्ष पर थी जब भारत में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन और गांधी जी का सत्याग्रह अपने चरम पर था। इसी अंतर्संबंध को रेखांकित करते हुए प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ काशी प्रसाद श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'नेपाल का इतिहास' में लिखा है कि- नेपाली जन-जागृति का इतिहास भारतीय जन-जागृति से सदैव जुड़ा रहा है। आगे चलकर जब नेपाल में संवैधानिक संकट गहराया, तो भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु की पहल पर राणाओं और नेपाल नरेश त्रिभुवन के बीच 'दिल्ली समझौता' हुआ,

जिसके तहत नेपाल में पुराने सांस्कृतिक मूल्यों को बचाते हुए जनता के प्रति उत्तरदायी शासन प्रणाली को स्वीकार किया गया।

निष्कर्ष : अतः इस पूरे घटनाक्रम के निष्पक्ष विश्लेषण से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि नेपाल के राजा, वहां के राजनेताओं और आंतरिक शक्तियों ने अपने आपसी त्रिकोणीय संघर्षों और गतिरोधों को सुलझाने के लिए तत्कालीन भारतीय नेतृत्व को मध्यस्थता करने के लिए स्वयं आमंत्रित किया था। भारतीय प्रयासों के फलस्वरूप ही नेपाल का वह भीषण संवैधानिक संकट टला और राजा त्रिभुवन पुनः गद्दी पर आसीन हो सके, जिससे नेपाल में लोकतंत्र का मार्ग प्रशस्त हुआ। यद्यपि इस भारतीय मध्यस्थता की नेपाल के कुछ समाचार पत्रों और राजनीतिक गुटों द्वारा 'आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप' कहकर आलोचना भी की गई और भारत विरोधी प्रचार को हवा मिली, लेकिन यह ऐतिहासिक सत्य है कि यदि नेपाल में भारत की कोई विशिष्ट राजनीतिक भूमिका बनी थी, तो उसके लिए स्वयं तत्कालीन नेपाली नेतृत्व की आंतरिक परिस्थितियां और उनकी मांगें ही उत्तरदायी थीं। संक्षेप में, नेपाली राष्ट्रवाद के उदय, विकास और वहां लोकतंत्र की स्थापना में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक प्रेरणा और व्यावहारिक सहयोग की भूमिका अत्यंत युगांतरकारी और निर्णायक रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

आधार ग्रन्थ सूची : -

हिन्दी पुस्तकें :

1. रंजन, आलोक (2010) नेपाली क्रांति, इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार, राहुल फाउंडेशन, नई दिल्ली
2. चौधरी,रंजन स्वाति (2015), भारत-नेपाल संबंध, एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण,मेधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3. वर्मा, आनंदस्वरुप (2011) एवेरेस्ट पर लाल झंडा,दिल्ली ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली
4. वर्मा, आनंदस्वरुप (2021) समकालीन तीसरी दुनिया–प्रगतिवादी नेपाली साहित्य विशेषांक, गार्गी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. शरण, डॉ.दीनानाथ (2018) नेपाली साहित्य का इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ, पटना
6. शाहा, ऋषिकेश(1992) एनसिएंट एंड मेडिविअल नेपाल, मनोहर पब्लिकेशन, नई दिल्ली

नेपाली पुस्तकें :

1. प्रधान,अनुराग (1981) पहिलो प्रहर, श्याम प्रकाशन, दार्जिलिंग
2. छेत्री, हिरा (2011) भारतेली नेपाली पत्र-पत्रिकाको शताब्दी (1447-1946) चरित्र प्रकाशन, कालेपोंग
3. दहाल, विद्यापति(2014) भारतीय नेपाली साहित्यको इतिहास,संस्करण प्रथम, उदालगुड़ी,असम
4. देवी,डॉ. गोमा (2019) भारतीय नेपाली साहित्यको विश्लेषणात्मक इतिहास, गोरखा ज्योति प्रकाशन,गुवा हाटी, असम
5. तिवारी,सरिता (संस्कारण, 2015) प्रश्नहरुको कारखाना, साङ्ग्रिला पुस्तक प्रा. लि., काठमाण्डू,.
6. नाभा, सापकोटा(मार्च 2015) 'परिवार' वॉल्यूम 1,असम
7. नर्मदुंग, जीवन(1992) पर्यवेक्षण, श्याम ब्रदर्स प्रकाशन, दार्जिलिंग
8. नेपाल खेमराज(2021)सं.पूर्वोत्तर भारतको नेपाली साहित्यको इतिहास, गंगा विष्णु पब्लिशर, पटना

•